B.Sc.+
B.A. Part I
Hindi प्रथम
पुस्तक का नाम -
कविता - कानन

(1)

डॉ० अनुपमा कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस०एन०एस० कॉलेज,
जहानाबाद

प्रश्न:- विद्यापति का कवि परिचय प्रस्तुत करें।

अथवा

विद्यापति की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख करें।

अथवा

विद्यापति का आलोचनात्मक साहित्यिक कवि परिचय प्रस्तुत करें।

उत्तर:- जयदेव की देववाणी की स्निग्ध पीयूष धारा जो काल की कठोरता में दब ~~गयी थी~~ गयी थी अवकाश पाते ही लोकभाषा की सरसता में परिणत होकर मिथिला की अमराइयों में कविता कामिनी के कमनीय कांत विद्यापति के कोकिल कंठ से प्रकट हुई। मैथिल कोकिल विद्यापति की कवित कानन हिन्दी साहित्य की अमराइयों में सबका मन मोह लेती है। यदि संस्कृत साहित्य को जयदेव पर अभिमान है, यदि बंगला साहित्य चंडीदास पर नाज है तो हिन्दी साहित्य को भी विद्यापति की कवितै कानन पर नाज है।

पर दुर्भाग्य यह कि ऐसे महाकवि का और तो और जन्म संवत, मृत्यु संवत इत्यादि अब भी विवाद का विषय बना हुआ है। फिर भी ज्यादातर लोग इनका जन्म 1340 ई० ~~तथा~~ तथा निधन 1450 ई०, जन्मस्थान बिसपी नामक ग्राम, जाति - ब्राह्मण, पिता का नाम गणपति ठाकुर, माता का नाम हाँसिनी देवी, पुत्र का नाम हरपति तथा पुत्री का नाम दुल्लही ज्यादा प्रमाणिक मानते हैं। इनके प्रधान आश्रयदाता राजा शिवसिंह थे। कुछ लोग इन्हें वीरगाथा काल का कवि मानते हैं और कुछ लोग इन्हें भक्ति काल का कवि मानते हैं।

इन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की जिनमें - कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष-परीक्षा, गंगावाक्यावली, शैवसर्वस्व-सार, लिखनावली तथा पदावली इत्यादि प्रमुख हैं। पर इन सबों में पदावली का अद्वितीय महत्व है। कुछ लोग इन्हें वैष्णव कवि, शृंगारिक, कुछ लोग इन्हें शाक्त तथा कुछ लोग

इन्हें शैव कहते हैं। क्योंकि इन्होंने राधा कृष्ण की भक्ति भावना के साथ-साथ दुर्गा, गौरी, शंकर की भी स्तुति की है। पर वास्तविकता यह है कि आधुनिक मैथिलों की तरह ये शिव, कृष्ण तथा दुर्गा तीनों को मानते हैं। किसी एक सम्प्रदाय के ये कट्टर पोषक नहीं हैं। ये चन्दन, सिन्दूर और भस्म तीनों एक साथ लगाते हैं।

विद्यापति एक जातीय कवि हैं। इनके पदों का सम्मान [illegible] के मन्दिर से लेकर कोहबर-घर तक तथा गलियों की पनिहारिनों से लेकर राजाओं की अट्टालिकाओं तक समान रूप से है।

कोई मिथिला जाकर तमाशा देखे। एक [illegible] हाथ में [illegible] विद्यापति 'कतेक हरब दुःख मोर हे भोलानाथ' गाते-गाते तन्मय हो अपने आप को भूल जाता है उसी प्रकार एक वृद्ध — 'तातल सैकत वारि बिन्दु सम सुत मित रमणि समाजे' गाता हुआ अपने नयनों से गर्म-गर्म अश्रु बिन्दु गिराने लगता है। यदि नव वधू को कोहबर में ले जाती हुई कलकंठी कामिनियाँ — 'साजनि [illegible] पहु [illegible] जागहि [illegible] देवों' गाकर नव वर-वधू के हृदयों को एक अनोखे आनन्द में डुबो देती है तो नवयुवक — 'नव नव यौवन नव नव [illegible] देखल चलि देह' पढ़ता हुआ कामुक कल्पना से रोमांचित हो उठता है।

विद्यापति शृंगारिक कवि हैं। उन्होंने राधा कृष्ण के माध्यम से उनकी प्रणय लीलाओं का अत्यन्त प्रभावोत्पादक वर्णन किया है। संयोग शृंगार के मादक चित्र हों या वियोग व्यथा का मार्मिक चित्रण हृदय की तन्मयता और गहराई दोनों की अवस्थाओं में इनकी कविता में है। वस्तुतः विद्यापति के शृंगार वर्णन में न तो मनोवैज्ञानिकता का अभाव है और न ही उसे पीछे आने का वियोग ही कहा जा सकता है। संयोग शृंगार के साथ-साथ इनका वियोग वर्णन भी देखने लायक है। घनानन्द आदि दो चार को छोड़कर हृदय वेदना का ऐसा सूक्ष्म वर्णन प्रायः नहीं देखा जाता। विद्यापति का विरह वर्णन प्रेमिका के हृदय की तरंग है — इसमें वेदना है व्याकुलता है, कोरा हाय-हाय नहीं है। यहाँ विरह व्यथित हिया की स्वाभाविक वेदना है।